

विचार बिन्दु

स्वयं प्रकाशित दीप को भी प्रकाश के लिए तेल और बत्ती का जतन करना पड़ता है बुद्धिमान भी अपने विकास के लिए निरंतर यत्न करते हैं। कोई भी व्यक्ति अयोग्य नहीं होता केवल उसको उपयुक्त काम में लगाने वाला ही कठिनाई से मिलता है। —शुक्रनीति

आयुर्वेदाचार्यों के ज्ञान को प्राथमिकता दीजिये

इंटरनेट ने आयुर्वेद पर समाचारों, सूचनाओं और नुस्खों का ऐसा विशाल बाजार खड़ा कर दिया है कि आप उससे बच नहीं सकते। वस्तुतः इंटरनेट, ब्लॉगिंग और सोशल मीडिया द्वारा उत्पादित भीड़-ज्ञान ने पत्रकारिता का ऐसा लोकतंत्रीककरण किया है कि भीड़ोत्पादित इस ज्ञान में प्रमाण-आधार की खोज बहुत कठिन होती जा रही है। विशेषकर, औषधियों के चमत्कारी प्रभाव का दुष्प्रचार आयुर्वेद की प्रमाण-आधारित विश्वसनीयता का सबसे बड़ा दुश्मन है। आज की चर्चा का मूल उद्देश्य यह बताना है कि जब सोशल-मीडिया द्वारा उत्पादित भीड़-ज्ञान आयुर्वेद के यथार्थ-ज्ञान को लील रहा हो तो आयुर्वेदाचार्यों का सहारा लेना ही उचित और कल्याणकारी होता है।

इंटरनेट ने विशाल जनसंख्या के मध्य उपलब्ध दुष्टिकोणों की विविधता को लोगों तक पहुँचाने का अभूतपूर्व कार्य किया है। यह कार्य अकेले कोई भी मीडिया मानव इतिहास में कभी नहीं कर पाया था। लेकिन, इंटरनेट दुधारी तलवार है। स्वार्थवादियों द्वारा जानबूझकर स्वहितसाधक सनसनीखेज झूठ और सूचनाओं के प्रचार का एक सर्वोत्तम वैश्विक मंच भी आज इंटरनेट के रूप में मिल गया है। स्वास्थ्य लाभ के लिये वैज्ञानिक जानकारी युक्तिव्यपनश्रयी चिकित्सकीय योगों के निर्धारण में आवश्यक है। लेकिन सर्वश्रेष्ठ क्या है, इसकी आम लोगों द्वारा गलत व्याख्या कर लेने का खतरा तब और भी अधिक बढ़ जाता है जब सॉच-झूठ बराबर लोकप्रिय हो रहे होते हैं। यह समस्या आज इसलिये भी बढ़ गयी है क्योंकि भगदड़ वाली जीवनशैली के कारण प्रकाशित सामग्री को सटीकता और सुस्पष्टता सुनिश्चित करने के लिये समय का अभाव है।

आयुर्वेद चमत्कार नहीं अपितु आहार, विहार, रसायन, और औषधियों का का सम्पूर्ण जीवनोपयोगी विज्ञान है। आजकल सोशल मीडिया और विज्ञापनों में आयुर्वेद के ऐसे नुस्खों की भीड़ है जो रामबाण, चमत्कारी, शर्तिया, अचूक, पुष्ट इलाज आदि नाम से बिक रहे हैं। साथ में प्रलोभन यह भी रहता है कि लाभ न मिले तो पैसा वापस लीजिये। इन शताक-लुभावन परन्तु भ्रामक और अवैज्ञानिक दावों ने एक ओर आम आदमी को असमंजस में डाल रखा है, वहीं दूसरी ओर इन्हें बनाने और बेचने वाले चौड़ी काट रहे हैं। आयुर्वेदिक औषधियों के संदर्भ में इस प्रकार के दावों से आयुर्वेद का जितना नुकसान हुआ है, उतना शायद ही कभी और हुआ हो।

वैसे तो शिक्षा के प्रसार के साथ ऐसे दावों के प्रति आमजन में संदेह और सजगता बढ़ी है, लेकिन इस व्यक्तिगत संदेह ने समूची आयुर्वेद चिकित्सा पद्धत को ही संदेहास्पद बनाना शुरू कर दिया है। समस्या का केवल एक ही निदान है कि आप ऐसी जानकारी पर भरोसा कर लेने के बजाय उत्तम आयुर्वेदाचार्यों की सलाह लीजिये। ख्याल रखिये, जिन लोगों द्वारा चमत्कार के दावे किये जाते हैं, उनका प्रायः आयुर्वेद से घन कमाने के अतिरिक्त और कोई लेना-देना नहीं रहता है।

गलाकाट प्रतिस्पर्धा में भिड़ी हुई फार्मसियों बाकी कसर निकाल देती हैं जो उनकी औषधियों के चमत्कारी होने का दावा करती हैं। उदाहरण के लिये, चार राज्यों में आयुर्वेद की औषधियाँ बेचने वाली कुछ दुकानों में सबसे महंगी आयुर्वेदिक औषधि की उपलब्धता पूछे जाने पर उत्तर में जिन औषधियों के नाम आये, उनमें सबसे विम्यस्यकारी तो एक ऐसा रसायन मिला जिसके आधा किलोग्राम वजन वाले डिब्बे की कीमत 9१00 रुपये से अधिक थी। इसके अलावा सैंक्स और ब्यूटी के बाजार में आयुर्वेद के नाम पर कई गोपनीय औषधियाँ भी छापी हुई हैं, जो 5000 से 7000 रुपये प्रति पैक धड़ल्ले से बिकती हैं। जाने-अनजाने कई वास्तविक आयुर्वेदाचार्य भी गलती कर बैठते हैं, जब रोगी को परामर्श व औषधि-निर्धारण करते हुये प्रायः यह कह देते हैं कि इस औषधि का इस रोग में चमत्कारी प्रभाव है।

एक बार पुनः यह बताना आवश्यक है कि चमत्कार और विज्ञान का आपस में पुरतैनी बैर है। चमत्कार के लिये कारण और प्रभाव को स्थापित करने की कोई सार्वभौमिक, सैद्धांतिक या प्रायोगिक बाध्यता नहीं है। इग एंड मैजिक रेमेडीज (ऑब्जेक्शनेबल एडवर्टाईजमेंट) एक्ट, 1954 ऐसी औषधियों के विज्ञापनों का निषेध करता है, जो चमत्कारी प्रभाव का दावा करती हैं। यह एक संज्ञेय या हस्तक्षेप्य अपराध है। तात्पर्य यह हुआ कि ऐसे प्रकरण में पुलिस बिना किसी न्यायालय की अनुमति के दखल कर सकती है। ऐसी 54 बीमारियों से संबंधित चिकित्सा, निदान या रोकथाम हेतु चमत्कारी दवा से संबंधित विज्ञापनों पर अभी प्रतिबंध है। इस वैधानिक स्थिति के बावजूद कैसर, बहरापन, मधुमेह, बन्ध्यापन, नाडीतंत्र, पौरुष-ग्रंथि, मिर्गी, पथरी, गैंगरिया, लकवा, कुष्ठ, मोटापा, अस्थि-रोग, नामदंरी, कृष्ण आदि जैसी अनेक बीमारियों के बारे में टेलीविजन, अखबार एवं सोशल मीडिया में चमत्कारी दावे आज भी किये जाते हैं। इनसे सावधान रहना आवश्यक है। रामबाण शब्द का हिंदी में प्रयोग देखने पर गूगल सर्च में 7.82 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। अंग्रेजी में मैजिक और आयुर्वेद खोजने पर लगभग 9.0 लाख सन्दर्भ आते हैं। इसी प्रकार रामबाण इलाज के 2.92 लाख सन्दर्भ, रामबाण दवा के 1.29 लाख सन्दर्भ, और रामबाण आयुर्वेदिक दवा के 1.36 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। यदि चमत्कार एवं आयुर्वेद खोजें तो 1.34 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। इसके विपरीत, प्रमाण-आधारित आयुर्वेदिक चिकित्सा, या आयुर्वेद के मैजिक की साईंस खोजने पर 200 के अन्दर सभी सन्दर्भ सिमट जाते हैं। आयुर्वेद में चमत्कार किये जाने के दावे उन रोगों के लिये तो हैं ही जिन्हें असाध्य माना जाता है, परंतु बूढ़े को जवान बनाने, गोरा रंग व सुरर्शन काया प्राप्त करने, और नामर्द में मर्दानगी बढ़ाने के चमत्कारिक द्रुसूखे भी कोई कम नहीं हैं।

वास्तविकता को तीन स्तरों पर देखा जाना आवश्यक है। पहली बात यह है कि आयुर्वेद की मूल संहिताओं में चमत्कारिक चिकित्सा जैसा कोई पाठ पढ़ने में नहीं आता। दूसरा, आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों में भी इस प्रकार के हाथों-हाथ चमत्कार का कोई प्रमाण नहीं मिलता। और, अंततः आयुर्वेदाचार्यों के अनुभवजन्य-ज्ञान में भी चमत्कार के कोई लिखित व शोधपरक प्रमाण नहीं मिलते, भले ही उनमे से कुछ ने इस शब्द को वृुटिवश बार-बार उपयोग करने की आदत डाल ली हो। आयुर्वेद में सबसे पुराने ग्रन्थ चरकसंहिता एवं सुश्रुतसंहिता की भाषायी व्यवस्था प्रायः आधुनिक काल के वैज्ञानिक शोध-पत्रों की तरह संयमित एवं मर्यादित है। यही बात आचार्य वाग्भट के अष्टांग हृदय पर भी लागू होती है। यहां तक कि 13वीं शताब्दी में लिखी गई शारंगधरसंहिता या बाद के काल में आचार्य चक्रपाणिदत्त द्वारा लिखे गये चिकित्सा ग्रन्थ चक्रदत्त में कहीं-कहीं भाषायी अलंकार अवश्य परिलक्षित होता है, तथापि चमत्कार जैसे शब्दों से उन्हीं भी उचित और सम्मानजनक फ़ासला बनाये रखा। संहिताओं के ऐसे श्लोक, जो चमत्कार के नजदीक जाते हुये परिलक्षित होते हैं, वे भी हमारे द्वारा भाषा की समझ के फेर के कारण ही होना, अन्यथा संहिताओं के प्रत्येक योग का विस्तृत वर्णन एवं संबंधित औषधि की फलश्रुति में चमत्कार शब्द का प्रयोग नहीं हुआ। इनमें रोग-निदान एवं चिकित्सा, आहार-विहार, रसायन एवं औषधि के साथ पथ्य-अपथ्य का विस्तृत वर्णन मिलता है। चरकसंहिता के संपूर्ण चिकित्सा स्थाय और उस पर दिग्गज आचार्यों जैसे चक्रपाणि, गंगाधर आदि द्वारा की गई टीकाओं में भी चमत्कार शब्द के दर्शन नहीं होते हैं। इनमें चिकित्सकीय योगों और औषधियों, उनसे जुड़ी संपूर्ण जानकारी तथा प्रभाविता के लिये तुलनात्मक जानकारी का ऐसा वर्णन है जिन्हें आज भी विज्ञान-सम्मत माना जाता है। संहिताओं में तो इस हद तक सावधानी बरती गई है कि जिन प्रकरणों में अतिशयोक्ति अलंकार है, उनमें आचार्यों ने प्रायः ऐसा इंगित भी कर दिया है या सुनी-सुनाई होने का संकेत कर दिया है। यहाँ तक कि भैषज्य रत्नावली नामक ग्रन्थ में जहाँ एक योग का नाम रामबाण रस है, उपमा के बावजूद उसका वर्णन भी तार्किक और मर्यादित है।

इन परिस्थितियों में ध्यान रखने योग्य सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आयुर्वेद आयु का विज्ञान है, चमत्कार नहीं। आयुर्वेदिक औषधियां भी अचूक, रामबाण या चमत्कारिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप ही प्रभावी या उपयोगी होती हैं। वस्तुतः आयुर्वेद एक प्रमाण-आधारित, विस्तृत, प्रभावी, समग्र और संपूर्ण चिकित्सा पद्धति है जिसके द्वारा स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और रोगी का रोगोपचार होता है। आयुर्वेद आयु का विज्ञान है, आय का नहीं। पर समय तेजी से बदल रहा है, और यह आयुर्वेद के लिये अच्छा ही है, बशर्त बात प्रमाण-आधारित आयुर्वेद की हो रही हो। बात यदि भयंकर से भयंकर एंसेडिटी चुटकी बजाते ही गायब कर दिये जाने की हो तो इसे झॉसेबाजी ही समझिये। प्राचीन भारतीय साहित्य का सहारा लें तो यह कहना समीचीन होगा कि रामबाण केवल रामजी के पास ही है, और उसका प्रयोग भी केवल उन्हीं के बस की बात है। औषधियों के चमत्कारी प्रभाव का दुष्प्रचारी दावा प्रमाण-आधारित आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति की वैज्ञानिकता और विश्वसनीयता का सबसे बड़ा दुश्मन है। लोगों को स्वविवेक का प्रयोग करते रहना चाहिये और किसी बहकावे में नहीं आना चाहिये। आयुर्वेद को चमत्कार नहीं, अपितु विशिष्ट विधियों एवं सिद्धांतों से युक्त एक उत्कृष्ट चिकित्सा विज्ञान समझने में ही व्यक्ति, समाज और अर्थव्यवस्था की भलाई है।

समस्या असली आयुर्वेदाचार्यों को छोटने की भी कम नहीं है। किसी भी शहर में वास्तविक और असली बैचलर ऑफ़ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी की उपाधि वाले आयुर्वेदाचार्यों के अलावा विविध उपाधियों के बोर्ड लगे वैद्यजी, वैद्यजी, वेदकाचार्य, वेदजी, वैद्यजी आदि भी खूब फल-फूल रहे हैं। ये सब छद्मायुर्वेदाचार्य हैं। ऐसी स्थिति में ध्यान रखिये, विधिवत आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त बैचलर ऑफ़ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी, मास्टर आफ़ आयुर्वेदिक मेडिसिन, आयुर्वेद में डॉक्टर ऑफ़ फिलोसफी जैसी उपाधियाँ ही मान्य हैं। वास्तविक और मान्य उपाधियों से रहित कोई भी व्यक्ति चिकित्सा करता है तो वह चिकित्सकीय दुष्कर्म है।

—अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय, (भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त;वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)



रामनिवास बैरवा

अनेक प्रकार के उतार-चढ़ाव के दावों के साथ अमेरिका-ईरान का युद्ध जारी है। अमेरिका ने रूसी तेल की खरीद पर भारत पर पाबंदी लगाई थी, और ईरान ने होर्मुज जलडमरूमध्य से पूरे अरब देशों से तेल-गैस के टैंकरों को गुजारना बंद कर दिया। लेकिन अमेरिका ने रूस से 30 दिनों तक तेल खरीदी की भारत को छूट देकर होली के त्यौहार पर जहाँ वसन्त के नववर्ष का उपहार दिया है, वहीं ईरान ने भी भारत के दो गैस टैंकरों को होरमुज जलडमरूमध्य से गुजर जाने की छूट देकर होली और रमजान महिने का उपहार दिया है। इन दो एल.पी.जी. कंटेनर जहाजों के अलावा अभी भी (18 मार्च, 2026 को) भारतीय झंडे के 22 जहाज और

611 नायिक होर्मुजस्ट्रेट में फंसे पड़े हैं। इनमें 06 एल.पी.जी. के, एक एल.एन.जी. का और 04 कच्चे तेल के कंटेनर-जहाज शामिल हैं। इसे कूटनीतिक असफलता कहें या दो कंटेनरों को रास्ता देने-दिलाने का श्रेय लेने वालों का बड़बोलापना क्योंकि बाकी के जहाजों को छोड़ने के लिए ईरान ने भारत के सामने शर्त रखी है कि अमेरिका के द्वारा लगाई गई पाबंदियों के अनुसार भारत के मुंबई में रोककर रखे गये तीन ईरानी जहाजों को छोड़ा जाये।

अमेरिका ने वसंत का उपहारदेने के साथ ही कह दिया है कि वह... चीन की गलती भारत में नहीं दोहरायेंगे। यानि कि जो योजनाएं चीन से शिफ्ट होने वाले उद्योगों के लिए पलक-पावड़ बिछाने के लिए बनाई जा रही थी, वे व्यवहार में आने से पहले ही खतम कर दी गई हैं।

यह कोई आज की बात नहीं है। 1947 में, जब से भारत के नेताओं ने भारत के शासन की बागडोर सम्भाली है, तब से ही अमेरिका, ब्रिटेन आदि देश भारत को नेताओं को विश्वसनीय नहीं मानते हुए यहां पूंजी निवेश या औद्योगिक निवेश नहीं कर रहे थे। और आज भी यहां निवेश नहीं कर रहे हैं। एफ.डी.आई और एफ.आई.आई. भारतीय शेयर बाजार के मध्यम से किया जा रहा है जो कि शेयरबाजार में तेजी लाने के साथ-साथ

महंगाई, मुद्रास्फीति को साथ लाते हैं।फिर शेयरबाजार में बिकवाली करके बनावटी गिरावट लाई जाते हैं और विदेशी पूंजी निकालकर उसे डॉलरों में विदेशों में भेज दी जाते हैं। इस प्रकार अमेरिका या विदेश में ब्याज से कम आमदनी के मुकाबले एफ.डी.आई. और एफ.आई.आई से कहीं ज्यादा कमाई की जाते है। भारत कोई नाम में महंगाई और मुद्रास्फीति मिलती है।

2014 में छपी मेरी पुस्तक “अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय पूंजी और भारतीय अर्थव्यवस्था” में मैंने एक पूरा अध्याय ‘चीन की चर्चा’ का लिखा था। उसी के कम में 2०19 में मेरी उसी कड़ी की दूसरी पुस्तक “अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय पूंजी का साम्राज्य” छपी थी जिसमें मैंने “राजनीतिक पुनर्गठन, प्रतिद्वंद्विता-विश्वव्यापी वित्तीय पूंजी के सडिकेट, पेट्रोडॉलर और अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय पूंजी और भारत के अलावा साम्राज्य के लिए एक और युद्ध की तैयारी” जैसे अध्याय शामिल किये थे। उसमें यह व्यक्त किया था कि अमेरिका और यूरोपीय देश भारत के राजनीतिक और सामाजिक माहौल को देखते हुए यहां पूंजी निवेश नहीं करेंगे, यहां तक कि मध्यपूर्व के इस्लामिक देश भी भारत में पूंजी निवेश के लिए आगे नहीं आयेंगे, बल्कि चीन के साथ सहयोग करने से ही भारत की औद्योगिक प्रगति होगी।

अमेरिका द्वारा चीन से उतारे गये कफन से भारत के वस्त्र नहीं बनेंगे, यह बात समझ लेनी चाहिए। अमेरिका के साथ चाहे कितनी भी अच्छी ट्रेड डील कर ली जाये, यूरोपियन यूनियन से चाहे कैसी भी फ्री-ट्रेडडील कर ली जाये, उनसे भारत में औद्योगिक विकास नहीं होगा, सिर्फ व्यापार ही बढ़ेगा। कभी सोवियत संघ ने भारत में भारी उद्योग लगाने से वित्तीय, तकनीकी और कलपुर्जे देकर सहायता की थी, उसी प्रकार आज चीन तकनीक, कलपुर्जे और वित्तीय से भारत के विकास की नींव डालेगा, अमेरिका या यूरोप नहीं।

प्रसंगवश, यह बताना भी सही होगा कि ब्रिटेन और अमेरिका आपस में चिर सहयोगी होने के बावजूद दोनों एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते। कारण उनके भूतकाल में है। अमेरिका के ब्रिटेनवासी ब्रिटिश साम्राज्य से विद्रोह करके ही अमेरिकी बने है। ब्रिटेन इस टीस को कभी नहीं भूल सकता, जैसे भारत पाकिस्तान और बांग्लादेश के अस्तित्व से अभी तक भी खफा है। दूसरा यह कि दूसरे विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटेन, फ्रांस एवं अन्य यूरोपीय देशों में हुए नुकसान की भरपाई के लिए अमेरिका ने जो सहायता देनी थी, वह ब्रिटेन के माध्यम से ही दी थी, लेकिन ब्रिटेन ने अन्य देशों को उनकी पूरी सहायता राशि नहीं दी थी। इससे भी

अमेरिका एवं अन्य यूरोपीय देशों में ब्रिटेन की विश्वसनीयता वैसी नहीं है जैसी की होनी चाहिए। यही कारण है कि ब्रिटेन यूरोपियन यूनियन से अलग हो गया और अपनी मुद्रा पौंड-स्टर्लिंग के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय पूंजी की दौड़ में बना बैठा है। उधर रूस और चीन के आपसी तालमेल को सहयोग कहना गलत है।

उन दोनों देशों में खुरशेव के जमाने से लेकर ब्रेज़नेव तक काफी तन-तनी रही है, और आज चीन रूस से आगे है तो आपसी तालमेल हैं अन्यथा रूस की नियत यूक्रेन में देखी जा सकती है। लेकिन ब्रिटेन को पता होना चाहिए कि बीती बहरों फिर से नहीं आयेंगी, खलीफ़ाओं का साम्राज्य ना तो तुर्किये में बन पायेगा, ना ही तेहरान में। इनमें जो भी मिलता है, इनसे जो भी रियायतें मिलती है, यह भारत की खामोशी का मूल्य ही माना जायेगा। दुर्भाग्य से, भारत को दिवाली की गिफ्ट देने वाला दुनिया में कोई भी देश नहीं है। दिवाली की गिफ्ट तो केवल भारत की जनता ही दे सकती है, भारत की मानवपूंजी ही दे सकती है, वह भी तब, जबकि मानवपूंजी के समकक्ष का आपसी सहयोग हो।

—रामनिवास बैरवा, पूर्व क्षेत्रीस भविष्य निधि आयुक्त

इंतजार के 2०0 साल : जैसलमेर की वो शाही गणगौर जो आज भी अपने ईसर के बिना अधूरी है



अचलदास डांगरा

राजस्थान अपनी गौरवशाली परंपराओं और उत्सवों के लिए विश्वभर में विख्यात है, लेकिन

स्वर्णनगरी जैसलमेर की शाही गणगौर का इतिहास जितना भव्य है, उतना ही भावुक भी। जहाँ पूरे प्रदेश में ईसर-गणगौर (शिव-पार्वती) की जोड़ी की पूजा होती है, वहीं जैसलमेर में माता गणगौर की सवारी पिछले दो शताब्दियों से अकेली ही निकल रही है।

इतिहासकारों के अनुसार, आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व रियासत काल में जैसलमेर और बीकानेर के बीच सीमा विवाद चल रहा था। एक बार गणगौर की तीज पर जब शाही लवाजमा गडीसर सरोवर पर माता को पानी पिलाने पहुँचा, तो बीकानेर के सैनिकों ने अचानक आक्रमण कर दिया। जैसलमेर के योद्धाओं ने वीरता

दिखाई और गणगौर माता की प्रतिमा को तो बचा लिया, लेकिन वे भगवान ईसर की प्रतिमा को नहीं बचा सके। बीकानेर की सेना ईसर जी को अपने साथ ले गई। इस ऐतिहासिक घटना के बाद, जैसलमेर के राजपरिवार और प्रजा ने निर्णय लिया कि वे अपनी मर्यादा और स्वाभिमान को झुकने नहीं देंगे। तब से यहाँ गणगौर की सवारी अकेले ही निकाली जाने लगी। आज भी यहाँ बिना ईसर के ही शाही गणगौर की पूजा होती है, जिसे स्थानीय लोग माता का अपने ईसर के प्रति अखंड इंतजार मानते हैं। वर्तमान में सोनार दुर्ग के त्रिपोलिया कक्ष में माता को बहुमूल्य वस्त्रों, हीरों और स्वर्ण आभूषणों से सजाया जाता है।

पूर्व महारावल और राजपरिवार के सदस्य सोनार दुर्ग के त्रिपोलिया कक्ष में माता की विशेष पूजा करते हैं। स्थानीय पुरुष महिलाएं, युवक युवतियाँ भी गणगौर माता के दर्शन करते हैं। एक दशक पूर्व शाही लवाजमे के साथ ऊंटों, घोड़ों और ढोल-नगाडों के बीच माता की सवारी दुर्ग से गडीसर सरोवर तक निकलती थी। लोक संस्कृति का संगम: उस दौरान मार्ग में हजारी की संख्या में श्रद्धालु और पर्यटक माता के दर्शन करते थे। महिलाएँ मंगल गीत गाती थी और लोक कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते थे।

—अचलदास डांगरा, वरिष्ठ पत्रकार, जैसलमेर



गणगौर का पर्व श्रद्धा के साथ मनाया, महिलाओं ने पूजा-अर्चना की

मसूदा, (निर्सं)। उपखंड क्षेत्र में शनिवार को गणगौर का पर्व पारंपरिक श्रद्धा, हर्षोल्लास और अटूट आस्था के साथ मनाया गया। अखंड सौभाग्य और सुख-समृद्धि की कामना को लेकर सुहागिन महिलाओं और कन्याओं ने ईसर-गणगौर का विधि-विधान से पूजन किया।

पारंपरिक परिवेश में सजी महिलाएं के मन में इस पर्व को लेकर सुबह से ही उत्सव का माहौल नजर आया। महिलाएं और युवतियां

- महिलाओं ने अखंड सौभाग्य और सुख-समृद्धि की कामना की**

पारंपरिक राजस्थानी वेशभूषा और आभूषणों में सज-धज कर आँखों पर फैसी चरमा, हाथों में मेहंदी और मंगल गीतों के साथ महिलाये स्थानीय सुभाष उद्यान पहुँची और वहां विभिन्न प्रकार के फूल पत्तियों से अपने कलश सजाएं



मसूदा उपखंड क्षेत्र में गणगौर का पर्व पारंपरिक श्रद्धा, हर्षोल्लास और अटूट आस्था के साथ मनाया।

और गाजे बाजे के साथ गणगौर के पारंपरिक गीत गाते हुए कलश लेकर घर पहुँची। महिलाओं ने समूह में एकत्र होकर गणगौर माता की पूजा कर, जल पिलाने, चूरेमे का भोग लगाने और

कथा सुनकर रस्म पूरी की। इस अवसर पर कई घरों में इशर गणगौर की विशेष सजावट कर स्थापित किया

पूजन के दौरान महिलाओं ने खेले गणगौर माता... जैसे पारंपरिक

गीतों के माध्यम से अपनी श्रद्धा व्यक्त की। कई स्थानों पर समाज ने सामूहिक आयोजन किए गए, जहां बड़ी संख्या में महिलाओं ने एक साथ पूजा-अर्चना की।

राशिफल रविवार 22 मार्च, 2026	
	
चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2083, भरणी नक्षत्र रात्रि 1०:43 तक, वैधृति योग दिन 3:41 तक, वणिज करण दिन 1०:37 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।	
गृह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मेष, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह	
आज रवियोग रात्रि 1०:43 तक है। ज्वालामुखी योग रात्रि 9:17 से रात्रि 1०:43 तक है।	
श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:03 से 9:33 तक, लाभ अमृत 9:33 से 12:34 तक, शुभ 2:०4 से 3:34 तक।	
राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:33, सूर्यास्त 6:35	

	मेष मन:स्थिति ठीक रहेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लंगेंगे। आज परिवार में मनोरंजन पर धन खर्च हो सकता है।		सिंह आज परिवार में शुभ-धार्मिक-मंगलिक संदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग बना रहेगा।।		धनु आज परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन का माहौल रहेगा। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।
	वृष घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। आज मन में असंतोष बना रहेगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।		कन्या चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्ययधान हो सकता है। सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बजते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।		मकर घर/परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।
	मिथुन आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता भी यथावत बनी रहेगी।		तुला परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मंगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज आपसी सहयोग-समन्वय में विलम्ब हो सकता है। आज बजते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।		कुंभ परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।
	कर्क अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।		वृश्चिक विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। आज अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे।		मीन आर्थिक कार्यों से अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आज महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।